ISSN 2349-9354

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

अप्रैल-जून 2015

वर्ष-48 • अंक-1

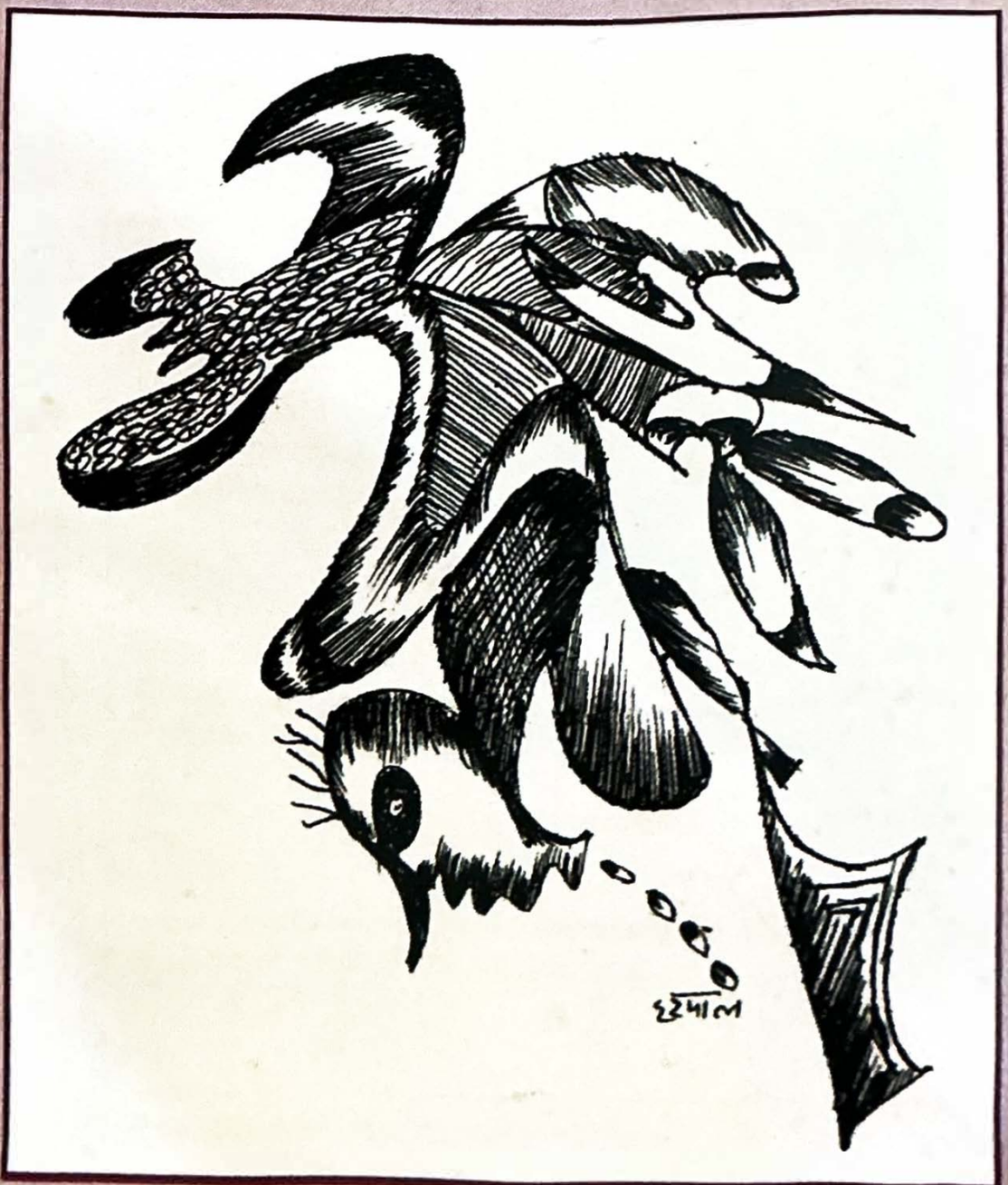

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

अप्रैल-जून, 2015

वर्ष 48, अंक 1

समीक्षा

ISSN : 2349-9354
अप्रैल-जून, 2015
वर्ष : 48, अंक : 1
प्रकाशन तिथि : 15 जून, 2015

मूल्य :
एक प्रति : *तीस रुपये*

संस्थाओं के लिए : *पचास रुपये*

वार्षिक सदस्यता : *दो सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

संस्थाओं के लिए : *तीन सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

आजीवन सदस्यता : *पांच हजार रुपये (डाक खर्च सहित)*

संस्थापक सम्पादक
गोपाल राय

सम्पादक
सत्यकाम

संयुक्त सम्पादक
अमिताभ राय

प्रबन्धन
सीमा

सम्पर्क :
समीक्षा
द्वारा *अमिताभ राय*
ए-305, प्रियदर्शिनी अपार्टमेन्ट,
17-इन्द्रप्रस्थ प्रसार,
पटपड़गंज, दिल्ली-110092
मोबाइल : 09582502101
ईमेल : sameekshatraimasik@gmail.com

निवेदन : कृपया सारे भुगतान बैंक ड्राफ्ट अथवा ई-ट्रांसफर द्वारा निम्न चालू खाता संख्या : 2257002100004645, IFSC Code : PUNB0225700, पंजाब नेशनल बैंक, ईग्नू, मैदानगढ़ी, दिल्ली-110068 में कीजीए।

पत्रिका का अंक न मिलने पर इसकी सूचना उपरोक्त पते पर दें अथवा उपर्युक्त नं. पर सम्पर्क करें।

'समीक्षा' में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। सम्पादक, संयुक्त सम्पादक पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

आवरण-चित्र : हरपाल

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त।

अनुक्रम

सम्पादकीय : समीक्षा की घर-वापसी

उपन्यास

राष्ट्रीय चिन्ताओं को रेखांकित करता उपन्यास *(गरीब होता देश)* — विजय बहादुर सिंह — 5
भक्त बसवेश्वर कथा *(राज्यपाल, उदय रवि)* — शैलेश्वर सती प्रसाद — 8
इतिहास-यात्रा *(युगान्तर)* — कुलभूषण मौर्य — 11

कहानी

नीले पंखों वाली लड़कियाँ *(नीले पंखों वाली लड़कियाँ)* — हरे कृष्ण तिवारी — 14
भूत-भविष्य के आइनों में वर्तमान को देखना *(क्रॉस रोड्स)* — सुवास कुमार — 16

कविता

कभी के बाद अभी *(कभी के बाद अभी)* — कविता भाटिया — 18
कविता में पूरे समाज के सरोकार *(अचानक कुछ नहीं होता)* — प्रांजल धर — 21
दो समकालीन कविता पुस्तकें *(मोनालिसा की आँखें, तुम हो मुझमें)* — पूनम सिन्हा — 23

यात्रा-संस्मरण

दो यात्राएँ, दो उद्देश्य *(मोहाली से मेलबर्न, पाकिस्तान का मतलब क्या)* — विजय शर्मा — 25

ललित निबंध

आधुनिकता के चौराहे पर स्मृतियों की सुगंध *(नया चौराहा)* — व्यास मणि त्रिपाठी — 29

स्त्री-विमर्श

इंसाफ की अद्भुत मांग *(अबलाओं का इंसाफ)* — हरेराम पाठक — 33

विविधा

रचनालोक का प्रवेशद्वार *(पुरोवाक्)* — वेदप्रकाश अमिताभ — 36

डायरी

आधे-अधूरे डायरी अंश *(जंगल-जूही, आज और अभी)* — वीरेन्द्र सक्सेना — 38

नाटक

कुछ महत्वपूर्ण नाट्यकृतियां *(मेरे मंच की सरगम, जब शहर हमारा सोता है, पगला घोड़ा, बड़ी बूआजी, भारतेन्द्र रचना संचयन, चतुष्कोण एवं अन्य नाटक)* — लवकुमार लवलीन — 40

आलोचना

रामचरितमानस का बहुरंगी पाठ *(रामचरितमानस : पाठ : लीला : चित्र : संगीत)* — रवि श्याम द्विवेदी — 48

पुस्तक-परिचय

सहज कविताएँ *(तितलियों को उड़ते देखा है)* — प्रकाश अर्श
ऐतिहासिक दस्तावेज *(हिन्दू राज्य-तंत्र)* — राजेन्द्र टोकी

समीक्षा की घर-वापसी

●

समीक्षा का पहला अंक जुलाई 1967 में प्रकाशित हुआ था और इसके संस्थापक संपादक प्रो. गोपाल राय ने हिंदी पत्रिका के संसार में एक नवोन्मेष के साथ पदार्पण किया था। डॉ. गोपाल राय अत्यंत कर्मठ, जुझारू और दुर्धर्ष व्यक्तित्व के स्वामी हैं और जो ठान लिया सो ठान लिया...'समीक्षा' निकालने की ठानी...निकालते रहे...त्रैमासिक बनी...द्वैमासिक बनी...मासिक बनते-बनते रह गई...अंततः त्रैमासिक कायम है। उन्होंने इस पत्रिका को खड़ा करने में जितनी मेहनत की उसका फल मिला। नए लेखक सामने आए; इसमें समीक्षित पुस्तकों की चर्चा हुई और 'समीक्षा' पुस्तक-समीक्षा का संग्रहालय बनती चली गई। इसी से 'हिंदी साहित्यब्दकोश' का भी प्रस्फुटन हुआ। शोधार्थियों के लिए यह एक अनुपम ग्रंथ है, यदि शोधार्थी मूल स्रोत का संधान करना चाहें तो...।

बाबूजी थक रहे थे...मेरे ऊपर लगातार दबाव बना रहे थे कि मैं 'समीक्षा' को अपने हाथ में ले लूँ...मैं हिचक रहा था इतनी बड़ी जिम्मेदारी ग्रहण करने से...परंतु अंततः बाबूजी के सामने हथियार डालना पड़ा...मैंने समीक्षा अपने हाथ में ले ली।

प्रबंधन और वित्तीय जुटान मेरे वश की बात नहीं थी। इस प्रयास में 'सामयिक प्रकाशन' के श्री महेश भारद्वाज आगे आए और उन्होंने 'समीक्षा' का जिम्मा संभालने की पेशकश की। अंधे को क्या चाहिए...। मैंने हाँ की और गाड़ी चल पड़ी। यह साथ पाँच वर्षों का रहा।

अब 'समीक्षा' फिर से हमारे हाथों में है। यह अंक ठेल-ठाल कर निकल रहा है और पीछे बची जितनी सामग्री इधर उधर धूल फाँक रही थी या नीचे दबी थी उसे महेश जी ने वापस कर दिया और उसे हम छाप रहे हैं। यदि अभी भी किसी समीक्षक की समीक्षा शामिल न हुई हो तो वे हमें उसकी प्रति भेजें, हम छापेंगे।

विधा के रूप में समीक्षा एक सशक्त विधा है जिसे अशक्त बनाकर अब हम रो-पीट रहे हैं। समीक्षा विधा की खूब धज्जियाँ उड़ाई जाती हैं, रूदाली गाई जाती है, छाती पीटी जाती है, मातम मनाया जाता है पर समीक्षा लिखने से दुरछिया करते हैं मानो यह कोई दोयम दर्जे की चीज है। सब जानते हैं कि पुस्तक समीक्षा आलोचना की आधारशिला होती है पर आलोचना ही जब हवाई हो गई तो पुस्तक कौन पढ़े और उसके बारे में कौन जाने। आलोचना की गति ढुलमुल है इसलिए कि पुस्तक समीक्षा को दरकिनार किया जा रहा है। पाठविहीन आलोचना का जीवन पानी के बुलबुले से ज्यादा नहीं होता। समीक्षा ही आलोचना को वायवीय और अमूर्त होने से बचा सकती है इसलिए जरूरी है कि पुस्तकें पढ़ें उस पर समीक्षा लिखें और बहस करें। पुस्तकों पर बहस कम हो रही है, यह चिंता का विषय है।

समीक्षा की इसी चिंता और सरोकार को समेटते-सहेजते हुए अब हम 'समीक्षा' को नए रंग-रूप में चलाएँगे...पुस्तकों पर बहस हो...इस पर जोर होगा...ताकि पाठक तय कर सके...कौन सी पुस्तक पढ़ी जाए...मैं सभी साहित्यकर्मियों से आह्वान करता हूँ कि वे इस आयोजन में सक्रियता से हिस्सा लें...मैं आश्वासन देता हूँ कि समीक्षा पूर्वाग्रह रहित थी, है और रहेगी। प्रायोजित समीक्षाएँ हम नहीं छापते। पिछले पाँच सालों से मैं इसी मुद्दे पर लहूलुहान होता रहा पर डटा रहा और अब मैं 'आजाद' हूँ।

अब सवाल रहा 'वित्त' का...वो तो हर साहित्यिक पत्रिका का संकट है...इसके लिए मैं अपने सभी सार्थियों, शुभचिंतकों और हितैषियों से अपील करता हूँ कि वे 'समीक्षा' को वित्तीय सहायता दें...सदस्य बनकर...विज्ञापन दिलवाकर...आदि-आदि। वादा है कि समीक्षा का 50वाँ अंक निकालूँगा और आगे भी इसे जारी रखूँगा।

बाबूजी बीमार हैं...बहुत बीमार हैं...शैय्या पर हैं...उनका आशीर्वाद हम सब पर, 'समीक्षा' पर, समीक्षा परिवार पर बना रहे इसी कामना के साथ...।

●

टटकी-ताजी किताबें

'आत्मकथाएँ' सामने हैं—प्रख्यात संपादक, आलोचक, कवि और साहित्य अकादमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की पुस्तक 'अस्ति और भवति' आत्मकथा है जिसमें लेखक ने घटनाओं का विवरण—नहीं दिया है बल्कि 'घट का विश्लेषण' किया है।

कथाकार मिथिलेश्वर का आत्मकथात्मक उपन्यास 'जाग चेत कुछ करौ उपाई', 'पानी बीच मीन पियासी', 'कहाँ तक कहें युगों की बात' की तीसरी कड़ी है। अब मिथिलेश्वर जी ही बताएँगे कि यह आत्मकथा है या उपन्यास या बाजार का दबाव कि आत्मकथा को भी उपन्यास का